Answers to RHA/Set-2

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (घ) 1, 2 और 3 सही हैं।

(*ii*) (ग) ऋषि से

(*iii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iv*) सम्राट अशोक ने रणभूमि के मार्ग में देखा कि कहीं भेड़िया किसी के शव को नोच-नोचकर खा रहा है और कहीं जंगली कुत्ते किसी शव को खाने के लिए आपस में लड़ रहे हैं। रणभूमि क्षत-विक्षत शवों से भरा पड़ा है। सियार लाशों को खींचते हुए ले जा रहे हैं। इस भयानक दृश्य को देखकर सम्राट अशोक काँप उठे।

(*v*) सम्राट अशोक ने हमेशा के लिए युद्ध नहीं करने की प्रतिज्ञा की और उन्होंने अपने तलवार को अपमानपूर्वक धरती पर फेंक दिया। उन्होंने उस दिन से फिर कभी युद्ध नहीं किया। कलिंग के युद्ध के पश्चात वे 'अहिंसा व्रत के व्रती' के रूप में प्रसिद्ध हुए।

2. (*i*) (ख) अविनाशी

(*ii*) (ग) केवल कथन 2 सही है।

(*iii*) (घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(*iv*) भारतवासियों की तुलना हिमालय से की गई है। भारतवासी हिमालय के समान अटल, अडिग और अविचल है। उन्हें हिंसा से हराया नहीं जा सकता और किसी भी प्रकार से डराया नहीं जा सकता है।

(*v*) भारतवासी कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी अपना धैर्य नहीं खोते और न ही वे विचलित होते हैं। वे संकट में मुसकराते रहते हैं। बड़ी-बड़ी बाधाएँ भी उनके साहस व धैर्य के सामने टिक नहीं पाती हैं। वे इनसे हार मान लेती हैं।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) मंदिर के विग्रहों को पता नहीं कितनी समझ है लेकिन वे रोज़ बदल-बदलकर मुलतानी कल्याण ललित और कभी भैरव रागों को सुनते रहते हैं।

(*ii*) हमने इतना हुड़दंग मचाया कि कॉलेज वालों को थर्ड इयर भी खोलना पड़ा।

(*iii*) सरल वाक्य

(*iv*) जिनका जन्मस्थान भी डुमराँव है, विशेषण उपवाक्य

(*v*) शहनाई बजाने के लिए प्रयोग की जाने वाली रोड अंदर से पोली होती है।

4. (*i*) बिस्मिल्ला खाँ के द्वारा गीतावाली और सुलोचना को ज्यादा याद किया जाता है।

(*ii*) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

(*iii*) कर्मवाच्य

(*iv*) भाव की

(*v*) कर्तृवाच्य

5. (*i*) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग

(*ii*) समुच्चयबोधक अव्यय, दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य

(*iii*) संख्यावाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग 'साल' विशेष्य का विशेषण

(*iv*) कालवाचक क्रियाविशेषण, 'सोचता हूँ' क्रिया की विशेषता बताने का कार्य

(*v*) सकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल

6. (*i*) उत्प्रेक्षा अलंकार

(*ii*) मानवीकरण अलंकार

(*iii*) अतिशयोक्ति अलंकार

(*iv*) उपमा अलंकार

(*v*) रूपक अलंकार

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (घ) कथन 2, 3 और 4 सही हैं।

(*ii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iii*) (ख) वहाँ इनकी कई पुश्तों ने शहनाई बजाई थी।

(*iv*) (ग) आनंदकानन

(*v*) (घ) कथन 2 और 4 सही हैं।

8. (क) मांगलिक अवसरों पर वातावरण में पवित्रता व आनंद भरने के लिए वाद्ययंत्रों से बजाई जाने वाली ध्वनि मंगलध्वनि कहलाती है। शहनाई मंगलध्वनि का प्रमुख वाद्य है। बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी साधना से शहनाई को साध लिया था। तन्मयता के साथ शहनाई बजाकर वातावरण को मंगलपूरित करने में उन्हें महारथ हासिल थी। इन विशेषताओं के कारण उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा जाता है।

(ख) नेताजी की मूर्ति पर चश्मा बदल-बदलकर कैप्टन लगाता था। वह शारीरिक रूप से कमज़ोर था पर वह सच्चा देशभक्त था। नेता जी की बगैर चश्मेवाले मूर्ति बुरी लगती थी उसे पीड़ा पहुँचती थी। इसलिए वह नया चश्मा मूर्ति पर फिट कर देता। जब किसी ग्राहक को वह चश्मा चाहिए होता तो वह नेता जी की मूर्ति से क्षमा माँगते हुए चश्मा ग्राहक को देता और मूर्ति पर दूसरा लगा देता।

(ग) 'काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक हैं'–इस कथन का आशय यही है कि काशी नगरी सदियों से 'बाबा विश्वनाथ' के धाम के रूप में जानी जाती है, किंतु बिस्मिल्ला खाँ साहब की शहनाई के सुरों से जुड़ जाने के कारण अब काशी उनके नाम से भी जानी जाती है। दूसरे, बिस्मिल्ला खाँ बाबा विश्वनाथ से बहुत गहराई से जुड़े हुए थे। काशी से बाहर होने पर भी वे दिन में एकबार अवश्य शहनाईवादन के समय बाबा विश्वनाथ की तरफ़ मुँह करके ही बैठते थे।

(घ) 'संस्कृति' पाठ का मूल स्वर सभ्यता को संस्कृति का परिणाम मानते हुए मानव-संस्कृति को अविभाज्य वस्तु सिद्ध करना है। लेखक ने यह भी सिद्ध किया है जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं है, वह न सभ्यता है न संस्कृति। जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी है, वही सभ्यता है और वही संस्कृति भी।

9. **1.** (*i*) (ग) केवल कथन 2 सही है।

(*ii*) (घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(*iii*) (ख) शिशु के मधुर मुस्कान को देख पाया।

(*iv*) (ग) बिना पलक गिराए

(*v*) (ग) केवल कथन 2 सही है।

10. (क) यह पंक्ति 'आत्मकथ्य' कविता से ली गई है। कवि के जीवन में ऐसे सुखद क्षण भी आए थे, जब उसके जीवन में सुख की चाँदनी बिखरी थी। वह उन्मुक्त हँसी हँसता था, अपने मन की बात खुलकर कहता था। कवि उन मादक क्षणों, चाँदनी रातों का, मुक्त कंठ के हास-परिहास का तथा प्रेम भरी अनुभूतियों का वर्णन कैसे करे क्योंकि वे सुख के क्षण अल्पजीवी थे।

(ख) मिट्टी का गुण-धर्म है–उसमें मिले हुए खनिज पदार्थ, प्राकृतिक तत्व, उसकी उपजाऊ शक्ति और उसके वे विशेष गुण, जो मिट्टी को उर्वरा बनाते हैं और फ़सलें उगाने में सक्षम होते हैं। मिट्टी के गुण-धर्म कई कारणों से प्रभावित भी होते हैं– रासायनिक एवं कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से, विषैले रसायनों को धरती पर गिराने से।

(ग) कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है–

(*i*) बच्चे की मुसकान से मृतक में भी जान डाल देने संबंधी बिंब द्वारा।

(*ii*) तालाब छोड़कर झोंपड़ी में कमल के खिलने संबंधी बिंब द्वारा।

(*iii*) कठोर पत्थर पिघल कर जलधारा बनने संबंधी बिंब द्वारा।

(*iv*) बाँस या बबूल के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने संबंधी बिंब द्वारा।

(घ) संगतकार की आवाज़ में एक झिझक साफ़ महसूस की जा सकती है। वह लगातार यह भी कोशिश करता है कि उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से कहीं ऊँचा न हो जाए, परंतु यह उसकी असफलता नहीं है, न ही कमज़ोरी और न ही हीनता; अपितु यह तो उसकी मनुष्यता है, जिसके पीछे यही भावना छिपी रहती है कि दूसरे को हीन दिखाकर या दबाकर अपनी महानता प्रदर्शित करना मनुष्यता नहीं है। उसकी स्थिति या उसके स्वार्थहीन साथ का इसी दृष्टि से मूल्यांकन करना चाहिए। मुख्य गायक का प्रभाव बढ़ाने के लिए ही वह ऐसा करता है, जिससे उसके मानवतावादी विचारों का बोध होता है।

11. (क) आज की पीढ़ी आधुनिकता के रंग में रँगी हुई, प्रकृति को जाने-अनजाने नष्ट कर रही है। पर्वतीय स्थलों को गंदा कर, वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट कर रही है। वह चट्टानों पर नारे या विज्ञापन बनाकर उनके सौंदर्य को नष्ट कर देती है। लोग पर्यटन-स्थलों पर कूड़ा-करकट फेंककर उन्हें गंदा कर देते हैं। इसे रोकना बहुत ज़रूरी है, वरना हम स्वर्गीय सौंदर्य से वंचित रह जाएँगे। मैं पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए लोगों को अधिक-से-अधिक वृक्षारोपण करने, पेड़ों को न काटने, प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों एवं उपकरणों के कम से कम प्रयोग आदि के प्रति जागरूक करने का प्रयास करूँगा।

(ख) बढ़ती उपभोक्तावादी सोच, एकल परिवार को प्राथमिकता, वैयक्तिकता से प्रभावित होना, संवेदनशीलता में कमी आना आदि माता-पिता को दूर रखने के प्रमुख कारण हैं। ऐसे लोगों को भावात्मक रूप से समझाने की आवश्यकता है, उन्हें यह कहकर समझाया जा सकता है कि जैसा वे अपने माता-पिता के साथ कर रहे हैं, वैसा कल उनके साथ भी हो सकता है। वे वृद्धाश्रम भेजने से पूर्व माता-पिता के स्थान पर स्वयं को रखकर देखें।

(ग) एक दिन हिरोशिमा की सड़क पर घूमते हुए लेखक ने एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया को देखा जो एक मानव की थी। उस छाया को देखकर लेखक भीतर तक हिल गए। उन्हें लगा कि इतिहास जैसे भीतर कहीं सहसा एक जलते हुए सूर्य के समान उग आया और डूब गया। इस क्षण उन्हें लगा कि अणुबम-विस्फोट की उन्हें प्रत्यक्ष अनुभूति हो गई और वे स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट के भुक्त-भोगी बन गए।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (क) **जननी और जन्मभूमि**

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् जन्म देने वाली माता और जन्मभूमि दोनों ही स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। जिस प्रकार से माता अपने बच्चे का पालन-पोषण अनेक कष्टों को सहकर बड़े ही स्नेह से करती है वैसे कोई और नहीं कर सकता। ठीक उसी प्रकार से हमारी मातृभूमि भी हम पर अनेक उपकार करती है। वह हमें अपनी गोद में माता के समान ही आश्रय देती है। जिस प्रकार से माता अपनी संतान पर अपना सारा प्यार लुटाती है और हमें इस संसार में रहने योग्य बनाती है। ठीक वैसे ही धरती माँ भी स्वयं पर उगे हुए फल, अन्न आदि के द्वारा हमारे शरीर को पुष्ट करती है। हम इस पर बहने वाली नदियों का अमृतमय जल पीकर ही जीवित रह पाते हैं। यह धरती माँ हम सबको बिना किसी भेदभाव के जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने आँचल में आश्रय देती है। माता और जन्मभूमि के सुख के आगे स्वर्ग का सुख भी कुछ नहीं है। हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहें। हम इसकी सुरक्षा और सम्मान पर भी कोई आँच न आने दें। यह हम सभी के लिए बड़े गौरव की बात है कि हमने भारतभूमि पर जन्म लिया है। हम सबको मिलकर यह प्रण लेना चाहिए कि हम अपनी धरती माँ को हर प्रकार के संकट से मुक्ति दिलाएँगे।

(ख) **भौतिकवादी युग और मनुष्य**

आज का समय पूर्ण रूप से भौतिकवादी बन गया है। आज प्रत्येक मनुष्य जीवन जीने के लिए अधिक से अधिक साधन जुटाने में लगा हुआ है। ताकि वह अपने लिए अधिक से अधिक भौतिक सुख साधनों को इकट्ठा कर सके। ऐसे में वह स्वयं से और अपने परिवार से भी दूर होता चला जा रहा है। यह व्यस्त दिनचर्या किसी भी इंसान को आर्थिक संपन्नता तो दे सकती है किंतु मानसिक सुख कभी नहीं दे सकती। आज के इस आधुनिक युग ने मनुष्य को मानसिक तनाव जैसी विसंगतियों से जूझने को मजबूर कर दिया है। तनाव किसी भी व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से कमजोर करता है। भौतिक साधनों को जुटाने की इस होड़ ने आज के मनुष्य के जीवन का सच्चा सुख छीन लिया है। प्रत्येक मनुष्य को इस विषय में अवश्य सोच विचार करना चाहिए कि क्या ये भौतिक साधन उसे वास्तविक सुख व आनंद की अनुभूति करा रहे हैं। यदि नहीं तो उसे स्वयं के लिए और अपने परिवार के लिए समय निकालकर कुछ समय एक साथ व्यतीत करना चाहिए। यही सच्चा मानसिक सुख प्रदान कर सकता है।

(ग) **सच्चा सुख निरोगी काया**

आज के समय में मनुष्य की जीवन-शैली में बहुत अधिक परिवर्तन आ गया है। वह अपने हर छोटे-से-छोटे कार्य के लिए शारीरिक श्रम करने की अपेक्षा मशीनी उपकरणों पर निर्भर रहने लगा है। शारीरिक श्रम न कर पाने के कारण आज हम अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियों का शिकार होते जा रहे हैं। इसके लिए कहीं न कहीं हमारे खान-पान में आए बदलाव भी जिम्मेदार हैं। आज हम सभी पौष्टिक भोजन के स्थान पर जंक फूड, फास्ट फूड आदि का सेवन अधिक करने लगे हैं। यदि हम स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तो हमें अपने खान-पान में बदलाव करना होगा। किसी भी मनुष्य के लिए सच्चा सुख वही होता है यदि वह पूरी तरह से स्वस्थ है। स्वस्थ जीवन जीने के लिए हमें योग को और शारीरिक श्रम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। शारीरिक श्रम या योग का अभ्यास करने से हमारी मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। हमारे शरीर का प्रत्येक अंग लचीला बनता है। आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में यदि मनुष्य मानसिक और शारीरिक तौर पर स्वस्थ रहना चाहता है तो उसे प्रतिदिन योगाभ्यास करना और पौष्टिक भोजन करना इन दोनों को अपनी दिनचर्या में शामिल करना होगा तभी वह निरोगी शरीर वाला हो सकेगा और वास्तविक रूप में सुखी जीवन जी पाएगा।

13. (क) सेवा में

थानाध्यक्ष महोदय

य.र.ल. नगर, दिल्ली

दिनांक : 4 जून, 20xx

विषय– लड़कियों के प्रति बढ़ रहे अपराध के संबंध में।

महोदय

मैं दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र की निवासी हूँ। मैं अपने मोहल्ले में लड़कियों के प्रति बढ़ रहे अपराध के संबंध में आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहती है।

पिछले कुछ दिनों से हमारे क्षेत्र में लड़कियों के साथ छेड़छाड़ के मामले बहुत अधिक बढ़ गए हैं। सभी लड़कियाँ सुबह अपने दफ़्तर या विद्यालय जाने के लिए घर से निकलती हैं तो रास्ते में जाते समय कुछ असामाजिक प्रवृत्ति के लोग भद्दे-भद्दे कमेंट्स करते हैं। लड़कियों के द्वारा विरोध करने पर उन्हें बाद में देख लेने की धमकी भी देते हैं। इन सभी समस्याओं के कारण सभी लड़कियों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है।

मुझे पूरी आशा है कि आप हमारी इस परेशानी को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही अवश्य करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

आकांक्षा

अथवा

(ख) परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 21 मार्च, 20xx

प्रिय मित्र

सप्रेम नमस्कार

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकार मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम बाढ़ पीड़ितों की मदद करने के अभियान में हिस्सा ले रहे हो। यह एक अच्छा कार्य है। हम भी यहाँ बाढ़ पीड़ितों की सेवा के अभियान में हिस्सा ले रहे हैं। हमने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर खाने के लिए भोजन सामग्री और कुछ कपड़े एकत्रित किए हैं। हमारे समूह के सभी सदस्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में घर-घर जाकर बाढ़-पीड़ितों की मदद के लिए अधिक से अधिक सामान जुटाने का काम किया है। दल का नेता होने के कारण मुझे अतिरिक्त जिम्मेदारी सँभालनी पड़ी है। हमारे इस कार्य की क्षेत्र के लोगों ने और समाचार-पत्रों ने भी सराहना की है।

आशा है कि तुम भी अपने क्षेत्र में इस प्रकार के सामाजिक कार्य करके अपने दायित्व का पूर्ण निर्वहन करोगे।

तुम्हारा मित्र

आशीष

14. (क) **कार्यालय सहायक के पद के लिए स्ववृत्त**

नाम — महेश गुप्ता

पिता का नाम — श्री राजेश कुमार गुप्ता

माता का नाम — श्रीमती रूपा गुप्ता

जन्मतिथि — 14 मई, 1998

वर्तमान पता — B-5/22, रोहिणी, दिल्ली

स्थायी पता — उपर्युक्त

मोबाइल नं० — 9297xxxxxx

ई-मेल — mgupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2014	अ.ब.स. विद्यालय सी.बी.एस.ई., दिल्ली	हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान,	प्रथम	69%
2.	बारहवीं कक्षा	2016	अ.ब.स. विद्यालय सी.बी.एस.ई., दिल्ली	हिंदी, अंग्रेज़ी, राजनीति विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र	प्रथम	71%
3.	बी०ए० ऑनर्स	2019	श.ष.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अर्थशास्त्र	प्रथम	74%
4.	कंप्यूटर प्रोग्राम में डिप्लोमा	2020	इग्नू, नई दिल्ली	कंप्यूटर विज्ञान	प्रथम	75%

उपलब्धियाँ

• महाविद्यालय में आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

कार्यानुभव

• अ.ब.स. विद्यालय में विद्युत विभाग में सहायक कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में 1 वर्ष से कार्यरत।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए सभी योग्यताएँ मुझमें है। मैं पूरी निष्ठा के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित

महेश गुप्ता

15 जनवरी, 20xx

अथवा

(ख)

प्रेषक	:	abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता	:	pqr@gmail.com
प्रतिलिपि (सीसी)	:	stv@gmail.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी)	:	xyz@gmail.com
विषय	:	मच्छरों को मारने की दवाई के छिड़काव के संदर्भ में।

महोदय,

मैं विकासपुरी, दिल्ली की निवासी हूँ। आजकल मेरे मोहल्ले के सभी लोग बहुत अधिक मच्छर होने के कारण परेशान हैं। कुछ लोगों को तो मलेरिया और डेंगू भी हो गया है। बारिश होने के कारण जगह-जगह पानी इकट्ठा हो जाता है। कहीं-कहीं गंदगी होने के कारण भी ऐसा होता है। ये मच्छर पानी और खाने-पीने की चीजों को दूषित करते हैं और कई प्रकार की बीमारियाँ फैलाते हैं।

आपसे नम्र निवेदन है कि आप हमारे क्षेत्र में मच्छरों को मारने वाली दवाई का अधिक से अधिक छिड़काव कराएँ जिससे हम सबको इन मच्छरों से छुटकारा मिल सके।

कृपया मेल स्वीकार कीजिए।

धन्यवाद।

भवदीया

गार्गी

15. (क)

सेल **सेल** **सेल**

अब आपके शहर में सूती कपड़ों पर भारी सेल

सेल

बम्पर सेल

दो सूती दुपट्टों के साथ एक फ्री

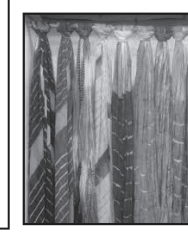

- दुपट्टे
- साड़ी व सूट

सूटों पर 50% की भारी छूट

✦ शीघ्र करें! ऑफर सीमित समय के लिए है

संपर्क करें : य.र.ल. नगर, मो. 8868xxxxxx

अथवा

(ख)

संदेश

दिनांक : 25 मई, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

आदरणीय माताजी,

सादर प्रणाम!

आप मेरे जीवन की प्रेरणा रही हैं। आपने कठिनाइयों से कभी भी न घबराते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहने के लिए सदा ही मुझे प्रेरित किया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ आपकी वजह से ही हूँ।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप हमेशा खुश रहें, स्वस्थ रहें।

आपको मेरी तरफ से मदर्स-डे की ढेर सही शुभकामनाएँ।

क.ख.ग.